दिनाँक :- 15-07-2020

कॉलेजका नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- पाँच

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- वैदिक सभ्यता

धर्म एवं धार्मिक विश्वास (Religion and Religious Belief)

ऋग्वैदिक आर्यों का धार्मिक जीवन आदिम अवस्था से बहुत आगे बढ़ चुका था। उन्होंने सभ्यता अन्धविश्वासों से ऊपर उठकर प्राकृतिक दृश्यों को अनुराग और श्रद्धा से देखा और उसमें उन्हें दिव्य सत्ता का आभास हुआ। प्रकृति के विभिन्न शक्तियाँ उनके

फिर इन्द्र वरुण, सूर्य, चन्द्र, मरुत, वायु, पर्जन्य उषा आदि देवता और देवी बन गयी। विभिन्न प्राकृतिक शक्तियों को देवता के रूप में देखकर आर्यों में उनकी प्रार्थना की। साथ ही पितृदेव, आचार्यदेव, मातृदेव और अतिथिदेव की भी कल्पना की गयी। आर्यों की पूजा-पद्धति में आत्मसमर्पण और भक्ति के भाव प्रधान थे। आर्यों के देवी देवता किसी न किसी शक्ति के अधिष्ठाता थे।

देवमंडल : आर्यों के देवताओं को तीन भागों में बाँटा जाता है। (i) पृथ्वी के देवता (ii) आकाश के देवता (iii) अन्तरिक्ष के देवता। पृथ्वी, सोम, अग्नि, बृहस्पति, पार्थिक देवता थे। इन्द्र, रुद्र, वायु, मरुत, पर्जन्य अन्तरिक्ष के देवता थे। द्यौस, वरुण, सूर्य, विष्णु, अदिति, उषा, सवित्रि, मित्र, पूषन् आकाश के देवता थे। इन्द्र सर्वशक्तिशाली देवता था। उसे मित्र और सहायक कहा गया है।

Scanned with CamScanner

वह शत्रु का नाश करता है। वह आर्यों का अवतारी पुरुष माना जाता था वह वर्षा करवाता है। वह आर्यों की रजसत्ता और सैनिक शक्ति का प्रतीक एवं लड़ाई में उनका सेनापति था। वरुण संसार के नैतिक जीवन का नियामक और रक्षक था। वह पापियों को दण्ड देता था। वह सत्य, पुण्य और भलाई का देवता था। अग्नि सबका पालक और रक्षक था। सूर्य पूजा की प्रथा की भी प्रचलित थी। इसके अतिरिक्त वायु सोम अश्विन, सरस्वती, जल बादल आदि देवताओं की पूजा की जाती थी। मरुत तूफान का प्रतिनिधित्व करता था। इस प्रकार आर्य प्रकृतिक की विभिन्न शक्तियों की पूजा करते थे। देवियों में उषा, इन्द्राणी और अदिति विशेष आदर की पात्र थी। मृत्यु के देवता यम को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था।

Scanned with CamScanner

चूंकि वैदिक युग में पुरुष-देवताओं की प्रधानता थी. इसलिए देवियों का स्थान गौण था. इस दृष्टि से ऋग्वैदिक सभ्यता से वैदिक सभ्यता भिन्न थी। हम पढ़ चुके हैं कि हड़प्पा संस्कृति में मातृदेवी की प्रधानता थी

धार्मिक कृत्य :- आर्यों के धार्मिक जीवन का केन्द्रीय तत्व था यज्ञों में विश्वास देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए प्रार्थना, स्तुति और यज्ञ किये जाते थे आर्यों का विश्वास था कि यज्ञ से प्रसन्न होकर ही देवता उन्हें वरदान देते हैं। वे समझते थे कि प्रार्थना द्वारा वे अपने मन्त्रों आप देवता तक पहुंचा सकते हैं। प्रार्थना और स्तुति के साथ-साथ यज्ञ में भोजन के पदार्थ अग्नि में, कुशों के नीचे या खुले आकाश में देवताओं को अर्पित किये जाते थे. दूध, घी, मांस, अन्न सोमरस इत्यादि के रूप में चढ़ाये जाते थे। मंत्री का भी उच्चारण किया जाता था।

Scanned with CamScanner

लोगो को विश्वास था कि मंत्रोच्चारण से देवतागण उपस्थित होकर आहुति स्वीकार करते है। देवता खुश होकर उपासको की मनोकामना पूरी करते है।

वैदिक काल में मूर्तिपूजा की प्रथा प्रचलित नही थी। न तो देवताओ की मूर्तियाँ बनाई जाती थी और न मन्दिरो का निर्माण हुआ था। पितरो की पूजा में भी आर्यो का विश्वास था। पितरो को भोजन की सामग्री श्रद्धापूर्वक अर्पित की जाती थी। पितरो की स्तुति की जाती थी तथा अन्न, धन एवं शक्ति के लिए प्रार्थना की जाती थी। मृतको की अन्त्येष्टि क्रिया विधिवत् की जाती थी।

प्रारंभ में यज्ञ की विधि सरल थी, धीरे-धीरे जटिल होती गयी। यज्ञ के अनुष्ठानो को पूरा करने के लिए पुरोहित की आवश्यकता हुई।

Scanned with CamScanner

यज्ञ में पर्याप्त व्यय होता था। पुरोहितों को दक्षिणा में स्वर्ण गाय और दास-दासियाँ दी जाती थीं। इसलिए यज्ञ राजा एवं धनी लोगों तक सीमित हो गया। यह मान्यता धीरे-धीरे स्थापित हो गयी कि देवता, ब्राह्मण और पुरोहित दोनों एकात्म हो जाते हैं। इस प्रकार यज्ञ के अनुष्ठानों ने पुरोहित की मर्यादा बढ़ायी, जिसके बिना यज्ञ ही सम्पन्न नहीं हो सकता था। राजा की शक्ति भी बढ़ी क्योंकि उसके पास यज्ञ के लिए आवश्यक धन था। यज्ञों में सम्भवतः पशुबलि का विधान था, क्योंकि अश्वमेध यज्ञ में अश्वबलि का उल्लेख मिलता है।

नैतिकता तथा स्वर्ग-नरक की कल्पना:- ऋग्वैदिक धर्म केवल उपासना, आराधना तथा आध्यात्मिक चिन्तन पर ही आधारित नहीं था। बल्कि इसमें नैतिक आदर्शों पर विशेष जोर दिया जाता था। पाप से बचने के लिए देव

Scanned with CamScanner

ताओ से प्रार्थना की जाती थी। जादू-टोना धोखा व्यभिचार आदि की घोर निन्दा की जाती थी। देव ताओ से असत्य भाषियो चोर-डाकुओ आदि के विनाश करने की प्रार्थना की जाती थी।

मृत्यु के बाद जीवन की कल्पना पाप के लिए पुण्य के लिए पुरस्कार के रूप में की गयी थी। इसके अनुसार पापी नरक में जाता है और पुण्यात्मा को स्वर्ग मिलता है। इस प्रकार पाप पुण्य और स्वर्ग नरक की भी कल्पना भी की गयी थी। यह कहना कठिन है कि ऋग्वैदिक युग में पुनर्जन्म के सिद्धांत की कल्पना हो पायी थी। केवल इतना ही कहा जा सकता है कि आर्य भौतिक शरीर के विनाश को जीवन का अन्त नहीं मानते थे। उनका विश्वास था कि मृत्यु के बाद भी मनुष्य के शरीर में एक तत्व रहता है।

Scanned with CamScanner